धिक धिक पड़ो

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को ।
मेरी सुध को,मेरे तन को,मेरे मन को,याद न किया धनी धाम।
जेहेर जिमी को लग रही, भूली आठों जाम।।

मूल वतन धनिएँ बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।।

सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़या विसराम।।

अखंड सुख छोड़या अपना, जो मेरा मूल मुकाम ।
इस्क न आया धनीय का, जाए लगी हराम।।

पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान ।
संसे मेरे कोई न रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान।।